SA – 500 (R)
अंकेक्षण साक्ष्य

Q. 01 अंकेक्षण साक्ष्यों से आप क्या समझते हैं ?

Ans: अंकेक्षण साक्ष्य –

निष्कर्षो तक पहुँचने के अंकेक्षक द्वारा प्रयोग में लाई गई सूचनायें जिन पर उसकी राय आधारित होती है। अंकेक्षक साक्ष्य में शामिल है लेखांकन अभिलेखों में अंर्तनिहीत वित्तीय – विवरण तथा अन्य सूचनायें दोनों।

Q. 02 अंकेक्षण साक्ष्यों के संबंध में अंकेक्षक के क्या कर्तव्य हैं ?

Ans: SA-200 के अनुसार, अंकेक्षक को Substantive एवं Compliance प्रविधियों के माध्यम से पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त कर लेना चाहिये ताकि वह उनसे उचित निष्कर्ष निकालने में समर्थ हो सके जिस पर वित्तीय विवरण पर उसकी राय आधारित होती है। इसके अतिरिक्त SA-200 के वाक्यांश 9 में ''अंकेक्षण निष्कर्ष तथा प्रतिवेदन'' यह वर्णित है कि अंकेक्षक को वित्तीय विवरणों पर अपनी राय अभिव्यक्त करने के आधार हेतू प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्यों तथा उपक्रम के व्यवसाय के अपने ज्ञान के आधार पर निकाले गये निष्कर्षो पर पुर्नविचार तथा निर्धारण कर लेना चाहिये। अतः उपरोक्त आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि अंकेक्षक की राय उचित निष्कर्षो द्वारा समर्थित होती है तथा उचित निष्कर्षो के पीछे पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य होते है। SA-500 के अनुसार, अंकेक्षक को ऐसी अंकेक्षण प्रक्रियाओं का निष्पादन करना चाहिये जो पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करने के उद्देश्य हेतू उन परिस्थितियों में उचित हो।

Q. 03 पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य के सिद्धांत क्या हैं ?

Ans: SA-500 निम्नलिखित प्रकार से पर्याप्त तथा उपयुक्त मद को परिभाषित करता है :–

अंकेक्षण साक्ष्यों की पर्याप्तता :–

अंकेक्षण साक्ष्यों की मात्रा का मापांकन। आवश्यक अंकेक्षण साक्ष्यों की मात्रा अंकेक्षक की सारवान मिथ्याकथन की जोखिम के निर्धारण तथा उन अंकेक्षण साक्ष्यों की गुणवत्ता से प्रभावित होती है। अर्थात् बैंक बैलेंस का निष्कर्ष निकालने हेतू कम से कम दो साक्ष्यों का होना अनिवार्य है :–

1. बैंक विवरण की प्रतिलिपि, तथा
2. बैंक समाधान विवरण पत्र

अंकेक्षण साक्ष्यों की उचितता :–

अंकेक्षण साक्ष्यों की गुणवत्ता का माप, यह उन निष्कर्षो के लिये उसकी संबद्धता तथा विश्वसनीयता में समर्थन प्रदान करते है जिन पर अंकेक्षक की राय आधारित होती है। (बैंक विवरण की प्रति बैंक प्रबंधक द्वारा उचित ढंग से प्रमाणित होना चाहिये, तथा BRS प्रबंधक खातों द्वारा पास होनी चाहिये तथा खाता शेषों में उपयुक्त प्रविष्टि करना आवश्यक है।)

यह अंकेक्षक का पेशेगत निर्णय है कि वह पर्याप्त तथा उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करे अथवा नहीं। यह पूर्ण रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि कितनी मदें सारवान हैं, क्या मिथ्यावर्णन की जोखिम वित्तीय विवरण की किसी मद से संबंधित है अथवा नहीं, वित्तीय सूचनाओं की प्रकृति तथा जटिलता इत्यादि।

Q. 04 अंकेक्षण साक्ष्यों के स्त्रोत क्या हैं ?

Ans: SA-500 (R) के अनुसार, अंकेक्षक द्वारा उपक्रम के भीतर के स्त्रोतो से अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त किये जा सकते हैं (जिन्हें सामान्यतः आंतरिक स्त्रोंतो के रूप में जाना जाता है) अर्थात् बैंक समाधान विवरण, तथा स्त्रोत तो उपक्रम से अलग हो (जिन्हें सामान्यतः बाहय स्त्रोतों के नाम से जाना जाता है।) अर्थात् बैंक समाधान विवरण पत्र बैंक के प्रबंधक द्वारा उचित ढंग से हस्ताक्षरित किये जाने चाहिये। सामान्यतः आतंरिक स्त्रोतो से प्राप्त किये गये साक्ष्यों को आतंरिक अंकेक्षण साक्ष्य तथा उपक्रम पृथक स्त्रोत से प्राप्त किये गये साक्ष्यों को बाहय अंकेक्षण साक्ष्य कहा जाता है। अंकेक्षण साक्ष्यों की प्रकृति के अनुसार उन्हें प्रपत्रीकृत किया जा सकता है। लिखित (अर्थात् जमीन का पंजीकरण), मौखिक (अर्थात् प्रबंधन द्वारा विवरण पत्र) अथवा दृश्य (अर्थात् प्रबंधन द्वारा भौतिक सत्यापन)

Q. 05 SA-500(R) के अंतर्गत निर्धारित अंकेक्षक प्रविधियां क्या है ?

CA Aseem Trivedi

Ans: SA-500(R) के द्वारा आवश्यक तथा इसकें अतिरिक्त SA-315 तथा SA-330 के अनुसार उचित निष्कर्ष निकालने के लिये अंकेक्षण साक्ष्य जिस पर अंकेक्षक की राय आधारित होती है निम्नलिखित के निष्पादन द्वारा प्राप्त किये जाते हैः–

1. जोखिम को निर्धारित करने वाली प्रविधियां द्वारा।
2. अन्य अंकेक्षण प्रक्रियाएँ, जिनमें शामिल है :–

(a) नियंत्रण चैक (Test of control) जिसे प्रारंभ में ैनइेजंदजपअम प्रविधियों के नाम से जाना जाता था। जब SAs द्वारा आवश्यक हो अथवा जब अंकेक्षक ऐसा करने का चुना करता है, तथा।

(b) संपुष्ठ प्रविधियॉ, (Substantive) इसमें शामिल है विवरणों को परीक्षण करना तथा संपुष्ट विश्लेषणात्मक प्रविधियॉ।

(c) चूँकि जोखिम के निर्धारण की प्रविधियों को SA-315 तथा SA-330 में परिभाषित किया गया है अब हम समझते है कि नियंत्रण चैक (Test of control) तथा संपुष्ट प्रविधियॉ क्या हैं ?

(d) अतिरिक्त अंकेक्षण प्रविधियॉ

(i) नियंत्रण जॉच (जिसे प्रारंभ में ैनइेजंदजपअम प्रविधियों के नाम से जाना जाता या) नियंत्रण जॉच यह मूल्यांकित करने हेतु अभिकल्पित की जाती है कि एक कथित सीमा तक सारवान मिथ्यावर्णन की रोकथाम करने, उसे खोजने तथा सही करने में नियंत्रण प्रभावी तौर से परिचालित किया जा रहा है।

ऐसे संबंधित अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करने हेतू अभिकल्पित की जाती है जो –

- नियंत्रण के निष्पादन को दर्शाते है तथा
- परिवर्तित परिस्थितियॉ जो यह दर्शाती हैं कि पर्याप्त निष्पादन से विचलन है।

यदि यह परिस्थितियॉ उपस्थित अथवा अनुपस्थित होती है तब अंकेक्षक द्वारा परीक्षण किया जा सकता है।

नियंत्रण जॉच का उदाहरण :–

X लि. के अंकेक्षक तथा X लि. के लेखांकन के मध्य 31.03.2005 को निम्नलिखित संवाद होता है।

अंकेक्षक : क्या आपने बैंक समाधान विवरण तैयार किया हैं?

लेखांकक : हॉ

अंकेक्षक : कृपया मुझे तत्कालीन BRS दिखाएँ

लेखांकक : यह 30.10.2009 को तैयार किया गया तत्कालीन BRS है।

अंकेक्षक : ये क्या है? आपने अगस्त 09 से सितंबर 09 तक कि लंबित प्रविष्टियों का कोई (effect)

प्रभाव नहीं दिया है। आपकी BRS को तैयार करने की आकृति क्या हैं ?

लेखांकक : अर्ध–वार्षिक

उपरोक्त से हम यह निष्कर्ष निकाला सकते हैं कि भले ही बैंक के परिचालनपर आंतरिक नियंत्रण विद्यमान हैं, परंतु न तो यह प्रभावी है और न ही पूरी अवधि के दौरान लगातार रहा है कि उस पर विश्वास किया जा सके।

(ii) संपुष्ट प्रविधियॉ :–

संपुष्ट प्रविधियॉ कथित सीमा पर सारवान मिथ्यावर्णन को खोजो हेतू अभिकल्पित की जाती है। इसमें विवरणों का परीक्षण तथा संपुष्ट विश्लेषणात्मक प्रविधियों का समावेश होता है। संपुष्ट प्रविधियों की डिजाईन में परीक्षण के उद्देश्य से संबंधित पहचानी गई परिस्थितियॉ शामिल होती है जो संबंधित कथन (relevant assention) में मिथ्यावर्णण स्थापित करते है।

यदि अंकेक्षक संपूर्ण वित्तीय विवरण तथा उसकी कुछ मदों पर संपुष्ट प्रविधियों को लागू करता है जैसे भवन तो हम उपरोक्त उल्लेखित संपुष्ट प्रविधि के अंतर्गत अवलोकनों को परस्पर संबंधित कर सकते है।

विद्यमानता : भवन का भौतिक सत्यापन अधिकार तथा।

कर्तव्य : क्या भवन कंपनी के नाम पर है।

उत्पत्ति : क्या उसे वर्ष के दौरान क्रय किया गया है, संशोधित अथवा तथा/उसकी मरम्मत की गई है अथवा

वह एक प्रारंभिक शेष है।

पूर्णता : रजिस्टर में उचित रूप से रिकॉर्ड किया गया है।

मूल्यांकन : एक संपत्ति को उचित Carring value पर रिर्कार्ड किया गया है।

मापांकन : उसे उचित राशि पर रिकॉर्ड किया गया है तथा बीमा तथा ह्रास संबंधित आगम अथवा व्ययों को

उचित अवधि में बॉटा गया प्रस्तुति तथा।

CA Aseem Trivedi

अभिव्यक्ति : एक मदकोमान्य व्यवहारों के अनुसार लेखांकन नीतियों तथा (AS के अनुसार) प्रकट, वर्गीकृत तथा परिभाषित किया गया है। तथा यदि कोई वैधानिक आवश्यकता है तो उसे भी पूरा किया गया है। (कंपनी की दशा में अनुसूची VI)

Q. 06 अंकेक्षक के पास उपलब्ध विभिन्न अन्य सहायक अंकेक्षण प्रक्रियाएँ क्या है? ज बवह अंकेक्षण प्रक्रियाओं, जोखिम निर्धारण प्रक्रियाओं, नियंत्रण जॉच अथवा संपुष्ट प्रविधियों को लागू करके पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करना चाहता है?

Ans: निम्नलिखित वर्णित अंकेक्षण प्रविधियों का जोखिम निर्धारण प्रक्रियाओं, नियंत्रण जॉच अथवा संपुष्ट प्रविधियों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, यह उन परिस्थितियों/प्रसंग पर निर्भर करता है जिनमें उन्हें अंकेक्षक द्वारा लागू किया जाता है।

1. निरीक्षण
2. अवलोकन
3. बाहय पुष्टीकरण
4. पुर्नगणना
5. पुर्न–निष्पादन
6. विश्लेषणात्मक प्रविधियॉ
7. पूछताछ तथा पुष्टीकरण

01. निरीक्षण :–

निरीक्षण में शामिल है रिकॉर्ड तथा प्रपत्रों का परीक्षण, चाहे वह आंतरिक हो अथवा बाहय, कागजात के रूप में हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक रूप में अथवा एक संपत्ति का भौतिक परीक्षण हो। निरीक्षण के एक उदाहरण को नियंत्रण जॉच के रूप में प्रयोग किया गया है जैसे अधिकृत साक्ष्यों के लिये रिकॉर्ड का परीक्षण करना।

02. अवलोकनः–

अवलोकन में शामिल है अन्य द्वारा निष्पादित प्रक्रियाओं अथवा विधि को देखना, उदाहरण के लिये उपक्रम के कर्मचारियों द्वारा अथवा नियंत्रण गतिविधियों के निष्पादन द्वारा रहतिये के लिये अंकेक्षक का अवलोकन।

03. बाहय पुष्टीकरणः–

एक बाहय पुष्टीकरण अंकेक्षक द्वारा एक तृतीय पक्षकार के अंकेक्षक से प्रत्यक्षतः लिखित प्रत्युत्तर के रूप में पेपर फॉर्म में, अथवा ई–फॉर्म तथा अन्य माध्यम द्वारा प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्य को प्रदर्शित करता है। अक्सर बाहय पुष्टीकरण प्रविधियॉ संबंधित होती है। जब संबोधित कथन (addreseing assention) कुछ खाता शेषों तथा उनके अवयवों के साथ जुड़े होते है।

04. पुर्नगणनाः–

पुर्नगणना में प्रलेखों अथवा रिकॉर्ड की गणितीय जॉच शामिल होती है। पुर्नगणना मानवीय अथवा इलेक्ट्रॉनिक तरीके से निष्पादित की जा सकती है।

05. पुर्न–निष्पादनः–

पुर्न–निष्पादन में अंकेक्षक द्वारा प्रक्रियाओं अथवा नियंत्रणों का स्वतंत्र संचालन शामिल है जो उपक्रम के आंतरिक नियंत्रण के एक भाग के रूप में वास्तव में निष्पादित की जाती है।

06. विश्लेषणात्मक प्रक्रियाः–

विश्लेषणात्मक प्रक्रिया में वित्तीय अथवा गैर–वित्तीय दोनों के ऑकड़ो में विश्वसनीय संबंधों के अध्ययन द्वारा बनाई गई वित्तीय सूचनाओं का मूल्यांकन शामिल है। उदाहरण के लिये, सकल लाभ अनुपात, शुद्ध लाभ अनुपात, ऋण समता अनुपात इत्यादि की गणना तथा विश्लेषण इत्यादि। विश्लेषणात्मक प्रक्रिया भी पहचाने गये उतार–चढ़ावों तथा संबंधों के निरीक्षण के ईद–र्गिद घूमता है जो अन्य संबंधित सूचनाओं तथा अनुमानित राशि के महत्वपूर्ण विचलन से असंगत होती है।

07. पूछताछ एवं पुष्टीकरणः–

पूछताछ में शामिल है उपक्रम के भीतर अथवा बाहर, वित्तीय तथा गैर–वित्तीय दोनों में जानकारी वाले व्यक्तियों की सूचनाओं हेतू निवेदन करना।

कुछ विषयों के संबंध में अंकेक्षक यह आवश्यक समझे तो वह मौखिक प्रत्युत्तर की पुष्टि करने हेतु प्रबंधन तथा जहॉ उपयुक्त हो वहॉ प्रबंधन के लिये प्रभारित व्यक्ति से लिखित विवरण प्राप्त कर सकता है जिस पर हम बाद में SA-580(R) में विचार–विमर्श करेंगे।

CA Aseem Trivedi

Q. 07 कैसे एक अंकेक्षक अंकेक्षण साक्ष्यों की संबधता तथा विश्वसनीयता को स्थापित करता है?

Ans: SA-500 (R) के अनुसार जब अंकेक्षण प्रक्रियाओं को अभिकल्पित तथा निष्पादित किया जाता है, तब अंकेक्षक एक अंकेक्षण साक्ष्य के रूप में प्रयोग की जाने वाली सूचना की संबद्धता तथा विश्वसनीयता को ध्यान में रखना चाहिये। अब प्रश्न यह उठता है कि संबद्धता तथा विश्वसनीयता क्या है तथा अंकेक्षक द्वारा उसे कैसे स्थापित किया जाता है।

अंकेक्षण साक्ष्यों की संबद्धताः–

SA-500(R) के अनुसार, संबद्धता से आशय वित्तीय सूचनाओं के संदर्भ में अंकेक्षण प्रविधियों के वित्तीय सूचना से सहसंबंध से है जैसे

एक अंकेक्षण साक्ष्य के रूप प्रयोग होने वाली सूचना का संबंध परीक्षण के निर्देशन द्वारा प्रभावित हो सकती हैं उदाहरण के लिये, यदि हम भवन की विद्यमानता तथा उसके स्वामित्व का सत्यापन कर रहे है तो भवन पर विशेषज्ञ के मूल्यांकन की रिर्पोट असंगत होगी परंतु जमीन का पंजीकरण तथा स्वामी के नाम में अनुमोदित नक्शा संगत होगे। इसके अतिरिक्त यदि हम भवन के मूल्य का सत्यापन कर रहे है तो उसका अनुमोदित नक्शा किसी काम का नहीं बल्कि विशेषज्ञ के मूल्यांकन की रिर्पोट ही संबद्ध अथवा संगत होगी। अंकेक्षण प्रक्रियाओं का दिया गया समूह ऐसे अंकेक्षण प्रक्रियाओं का दिया गया समूह ऐसे अंकेक्षण साक्ष्य प्रदान कर सकता है जो कुछ मान्य कथनों से संबंधित होती है किंतु अन्य के साथ नहीं। उदाहरण के लिये, किसी विशेष मान्य कथन के संबंध में अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करना उदाहरणार्थ, रहतिये की विद्यमानता किसी अन्य मान्य कथन (Assertion) के संबंध में अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करने के लिये एक प्रतिस्थापन (Substitute) नहीं है। उदाहरण के लिये, उस रहतिये का मूल्यांकन।

अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्सनीयताः–

जब तक अंकेक्षक विश्वसनीयता अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेता वह एक उचित निष्कर्ष नहीं निकाल सकता। अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्वसनीयता अंकेक्षण साक्ष्यों की प्रकृति तथा स्त्रोतों पर निर्भर करती है। उन्हें मान्य करते समय कुछ अपवाद विद्यमान हो सकते है, अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्वसनीयता के बारे में निम्नलिखित सामान्यीकरण उपयोगी हो सकते हैः–

01. अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है जब उन्हें उपक्रम से पृथक बाहरी स्त्रोतों से प्राप्त किया जाता है। (अर्थात आंतरिक अंकेक्षण साक्ष्यों की अपेक्षा बात अंकेक्षण साक्ष्य अधिक विश्वसनीय होते है) उदाहरण के लिये, बैंक विवरण की प्रमाणित प्रतिलिपि, एक उपक्रम में बनाये गये बैंक समाधान विवरण से अधिक विश्वसनीय होती है।
02. आंतरिक स्त्रोतों से उत्पन्न अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है जब उपक्रम द्वारा स्थापित किया गया संबंधित नियंत्रण (Related control) प्रभावी होता है जिसमें शामिल है उसकी तैयारी तथा उसका रखरखाव।

    उदाहरण के लिये, बैंक समाधान विवरण अधिक विश्वसनीय होगा अन्यथा यदि आंतरिक नियंत्रण प्रभावी होता है। (किंतु बैंक विवरण की प्रतिलिपी से ज्यादा नहीं)
03. अंकेक्षक द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्य, अप्रत्यक्ष रूप से अथवा निष्कर्ष या नतीजे के रूप में प्राप्त किये गये साक्ष्यों से अधिक विश्वसनीय होते है।
04. प्रपत्रीकरण रूप में प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्य चाहें वह कागज पर हो, इलेक्ट्रानिक अथवा अन्य माध्यम में हो, मौखिक रूप से प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्य की अपेक्षा अधिक विश्वसनीयता होते है। (उदाहरण के लिये, बोर्ड मीटिंग में लिये गये एक निर्णय के मौखिक पुष्टीकरण की अपेक्षा अंकेक्षक द्वारा पारित किये गये संकल्प की प्रति प्राप्त करना अधिक विश्वसनीय होता है।)
05. वास्तविक प्रपत्रों द्वारा प्रदान किये गये अंकेक्षण साक्ष्य, फॉटोकॉपी अनुलिपी, चलचित्र विश्वसनीय होते है। अंकीय रूप में प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्यों से अधिक जिनकी विश्वसनीयता उन्हें तैयार करने तथा रखरखाव के नियंत्रण पर निर्भर करती है।

    जब एक अंकेक्षक विभिन्न स्त्रोतों से अथवा विभिन्न प्रकृति के अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करता है तो वह एक बढ़ा हुआ विश्वास प्राप्त करता है। जो SA-500 के अनुसार अवलोकनों के अनुरूप परिणाम देते है।

Q. 08 यदि एक अंकेक्षण साक्ष्य प्रबंधन के विशेषज्ञ द्वारा तैयार किया जाता है तब उपक्रम के अंकेक्षक को कौनसी अतिरिक्त सावधानी को ध्यान में रखना होगा?

CA Aseem Trivedi

Ans: SA-500(R) के अनुसार, जब एक ऐसी सूचना का प्रयोग अंकेक्षण साक्ष्य के रूप में किया जा रहा है। जिसे प्रबंधन के विशेषज्ञ द्वारा तैयार किया गया है तो अंकेक्षक को एक आवश्यक सीमा तक, अंकेक्षण के उद्देश्य हेतू उस विशेषज्ञ के कार्य की महत्वपूर्णता के संबंध में:–

01. उस विशेषज्ञ की कुशलता, सक्षमता तथा उद्देश्यपरकता का मूल्यांकन करना चाहिये।
02. उस विशेषज्ञ की कार्य की समझबूझ को प्राप्त कर लेना चाहिये, तथा।
03. संबंधित मान्य कथन (Relevant assention) के लिये अंकेक्षण साक्ष्य के रूप में उस विशेषज्ञ के कार्य की उचितता का मूल्यांकन कर लेना चाहिये (वर्तमान में यह मुद्दा SA-620 में संबोधित है।)

Q. 09 एक अंकेक्षक को किस बात का ध्यान रखना चाहिये जब वह पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करने के लिये परीक्षण हेतू मदों का चयन करता है?

Ans: जॉच नियंत्रण तथा जॉच की व्याख्या को अभिकल्पित करते समय अंकेक्षक को परीक्षण हेतू मदों के चुनाव के माध्यम को सुनिश्चित का लेना चाहिये जो अंकेक्षण प्रक्रियाओं को पूरा करने हेतू प्रभावी होते है। परीक्षण के लिये मदों का चुनाव करने में, पैराग्राफ 7 द्वारा अंकेक्षक के लिये यह आवश्यक है कि अंकेक्षण साक्ष्य के रूप में प्रयुक्त होने वाली सूचना की विश्वसनीयता तथा संबद्धता को सुनिश्चित कर लें। प्रभावोत्पादकता (पर्याप्तता) एक अन्य पहलू है जिसे परीक्षण हेतू एक मद का चयन करते समय महत्वपूर्ण रूप से ध्यान में रखना चाहिये।

परीक्षण हेतू मदों का चयन करने के लिये अंकेक्षक निम्नलिखित में से किसी एक अधिक के मिश्रण का आश्रय ले सकता है:–

01. संपूर्ण मदों का चयन (100% परीक्षण)
02. विशिष्ट मदों का चयन
03. अंकेक्षण निदर्शन (Audit sampling)

01. संपूर्ण मदों का चयन:–

SA-500(R) के अनुसार, जॉच नियंत्रण की दशा में 100% परीक्षण करना अव्यवहारिक होता है, यद्यपि यह जॉच की व्याख्या हेतु बहुत अधिक सामान्य होता है। (अर्थात् संपुष्ट प्रविधियॉ) 100% परीक्षण उचित हो सकता है जब:–

01. मदों की संख्या, संख्यात्मक रूप से कम तथा मूल्यात्मक रूप से ज्यादा है।
02. जहॉ एक महत्वपूर्ण जोखिम विद्यमान है तथा अन्य साधन या माध्यम पर्याप्त उपयुक्त अंकेक्षण साक्ष्य प्रदान नहीं करते है। अथवा
03. एक गणना तथा अन्य प्रक्रिया जो पुनरहत्ति प्रकृति की होती है तथा जो एक सूचना व्यवस्था द्वारा स्वतः ही निष्पादित होती है एक 100% परीक्षण को लागत प्रभावी बनाती है।

02. विशिष्ट मदों का चयन:–

SA-500(R) के अनुसार, अंकेक्षक एक समग्र (Population) में से कुछ विशिष्ट मदों को चुनने का निर्णय ले सकता है। यह निर्णय लेने में उन तथ्यों का भी परीक्षण किया जायेगा जो सारवान मिथ्यावर्णन की निर्धारित जोखिम से संबंधित होते है तथा समग्र की विशेषताओं की भी जॉच की जायेगी। इसमें उपक्रम के बारे में अंकेक्षक की सूझबूझ भी शामिल है। चुनी गई विशिष्ट मदों में शामिल हो सकता है:–

1. बड़ी राशि अथवा मुख्य मदें :–

अंकेक्षक एक समग्र (Population) में से विशिष्ट मदों को चुनने का निर्णय ले सकता है क्योंकि वह बड़ी राशि के है अथवा कुछ अन्य विशेषताएँ प्रदर्शित करता है।

2. सभी मदें एक निश्चित राशि से ऊपर है:–

अंकेक्षण ऐसी मदों का परीक्षण करने का निर्णय ले सकता है जिनकी रिकॉर्ड की गई कुछ राशि के ऊपर है ताकि लेनदेन के एक वर्ग अथवा खातों शेषों की कुल राशि के एक बड़े भाग को सत्यापित किया जा सके।

3. सूचना प्राप्त करने हेतू मदें:–

अंकेक्षक उपक्रम की प्रकृति अथवा लेनदेनों की प्रकृति के बारे में सूचनायें प्राप्त करने हेतु मदों का परीक्षण कर सकता है।

यह ध्यान देने योग्य हैं कि इसके द्वारा अंकेक्षक को निर्दशन के नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं। इस तरह चुनी गई मदों पर लागू की गई अंकेक्षण प्रविधियों के परिणामों को संपूर्ण मदों (Population) पर नहीं लगाया जा सकता। तदानुसार, विशिष्ट मदों का चयनात्मक परीक्षण (Selective examination) शेष बची हुई मदों से संबंधित अंकेक्षण साक्ष्य प्रदान नहीं करता है।

अंकेक्षण निर्दगन:–

CA Aseem Trivedi

अंकेक्षण निदर्शन इस हेतू अभिकल्पित किया जाता है ताकि जिस निर्दगन (Sampk) का परीक्षण किया जाता है उसके आधार पर एक संपूर्ण मदों (Entire population) के बारे में निष्कर्ष निकालने में समर्थ हुआ जा सके। अंकेक्षण निर्दशन पर SA-530(R) में विचार किया जायेगा।

Q. 10 यदि अंकेक्षक अंकेक्षण साक्ष्यों में असंगता को पाता है अथवा उसे अंकेक्षण साक्ष्यों की विश्वसनीयता पर संदेह होता है तो उसकी अंकेक्षण प्रक्रिया क्या होगी?

Ans: यदि :–

01. यदि एक स्त्रोत से प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्य, किसी अन्य से प्राप्त किये गये अंकेक्षण साक्ष्यों से अलग होते है, अथवा
02. एक अंकेक्षण साक्ष्य के रूप में प्रयोग की जाने वाली सूचना पर अंकेक्षक को सदेह होता है तो अंकेक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिये कि इस समस्या को सुलझाने हेतू अंकेक्षण प्रक्रियाओं में क्या संशोधन करना चाहिये या और कौनसी अतिरिक्त प्रक्रियाओं का उपयोग करना चाहिये।

CA Aseem Trivedi